RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

आपराधिक भूमिका के संदर्भ में 'आपका बंटी' के पात्र

मगन परमार

शोध अध्येता, हिन्दी विभाग, भाषा-साहित्य भवन, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद

'आपका बंटी' लेखिका श्री मन्नू भंडारी लिखित हिन्दी उपन्यास साहित्य की कालजयी रचना है। इस उपन्यास में एक माता एवं पुत्र का स्नेह दाम्पत्य तनाव के कारण जिस विवशतापूर्ण स्थिति में आ जाता है उसका यथार्थ अंकन करने का प्रयास किया गया है। इस विवशतापूर्ण स्थिति के कारण सर्वाधिक दुर्दशा पुत्र-बंटी की ही होती है। इस स्थिति को उचित अंजाम न दे पाने में उपन्यास के कुछ पात्र कहीं-न-कहीं दोषी ठहरते है। बंटी बच्चा है, स्थिति पर उसका बस नहीं है।

अजय से तलाक हो जाने पर शकुन के लिए दूसरा पति और नया जीवन चुनने का रास्ता खुला हैं और वह यही करती हैं। अपने समस्यापूर्ण जीवन को उचित अंजाम देती है, लेकिन बंटी को भी तो उसे उचित अंजाम देना होगा। बंटी से शकुन का संबंध प्राकृतिक और जैविक के साथ-साथ संवेदना का, अपनत्व का, आत्मीयता का और जिम्मेदारी का भी हैं। डॉक्टर जोशी को अपनाने के बाद बंटी के प्रति अपना ममी-रुप क्रमशः कम करते जाना शकुन का दोष ही लगता है। सौतेली माँ की सात भाई चम्पा की कहानी सुनाने वाली शकुन ही बंटी के बारे में सौतेली माँ जैसा व्यवहार करने लगी थी। शकुन की डॉक्टर जोशी से शादी होने के कारण बंटी एक अनावश्यक तत्व-सा बनकर रह गया था। इसके लिए खुद को अपराधी मानते हुए शकुन बिसूर-बिसूरकर रो पड़ती है।

शकुन सिर्फ ममी-रुप में ही नहीं व्यक्ति-रुप में भी बंटी के प्रति दोषित है। बंटी से कटने की तुलना वह अपने किशोर और यौवन उम्रवाले उल्लास और उमंग से करती है, जिसे उसने उम्र के छत्तीस वर्ष बाद भी पाया है और जिसे अजय के साथ रहकर भी नहीं पा सकीं। इस उल्लास और उमंग को उसने कहाँ से पाया है? डॉक्टर जोशी से, और डॉक्टर जोशी को? बंटी की बीमारी के कारण ही तो दोनों का परिचय हुआ था। जिस बंटी के कारण शकुन ने डॉक्टर जोशी को पाया है और अपने जीवन को भरा-पूरा महसूस कर रही है, उसी बंटी को वह बाधारुप समझकर हटा देना चाहती है, इसलिए कि बंटी उसके और डॉक्टर जोशी के संबंध को स्वीकार नहीं कर रहा है। बंटी बाधारुप बन रहा है तो यह उसका अधिकार भी है; पुत्र-रुप में भी और व्यक्ति-रुप में भी। पुत्र-रुप में इसलिए कि शकुन के जीवन में डॉक्टर जोशी के आने के कारण उसकी पुत्र-रुपी संवेदनाएँ और अधिकार-भावनाएँ आहत हो रही है और व्यक्ति-रुप में इसलिए कि बंटी ही शकुन और डॉक्टर जोशी के संपर्क का कारण रहा था।

डॉक्टर जोशी का शकुन से मिलन बंटी की बीमारी के बारे में हुआ था। उन्होंने आत्मीयता और एहतियात से बंटी को और बंटी की बीमारी के कारण हौंसला खोती और घबराती शकुन को संभाला था। ऐसे ही वो लम्हें हुआ करते है जहाँ पर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भावनात्मक एवं संवेदनात्मक स्तर पर तादात्म्य बना सकता है या बनाने का प्रयास कर सकता है। डॉक्टर जोशी ने भी किया और इसी की अगली कड़ी के रुप में उन्होंने शकुन को अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार देकर बिना शब्दों की मुहताज बहुत-कुछ कह दिया था। बंटी के समाचार जानने के बहाने भी वे शकुन से संपर्क बढ़ाते रहे थे। कुल-मिलाकर शकुन को पाने में बंटी का ही उन्होंने सेतु रुप में उपयोग किया है।

बंटी के बारे में परेशान हो रही शकुन को आश्वस्त करने वाले डॉक्टर जोशी का शादी के बाद इसी बंटी के बारे में पहले दिन का रुखापन और व्याघात पड़ जाने की खीज छिपते नहीं है। डॉक्टर के इस रुख से तब शकुन को भी अपनी ग़लत ज़िद का एहसास हो आया था। अपनी अपराध-भावना के आवेग से रो रही शकुन को सांत्वना देने वाला बंटी याद आता है और उस वक्त डॉक्टर जोशी उसे सांत्वना देते हुए अपनी बाँहों में समेट रहे है तब वह अपनी चेतना में अनुभव करती है कि डॉक्टर जोशी को अपनाने के कारण ही उसे बंटी को खोना पड़ा और बंटी की दुर्दशा हुई-"बस, दो नन्हीं-नन्हीं बाँहे उन सबल बाँहों के नीचे अनदेखे अनजाने ही शायद मसल गईं।"(1)

इस प्रकार, बंटी की दुर्दशा के पिछे डॉक्टर जोशी का दोष शकुन के पति के रुप में अनदेखा और अनजाना है। व्यक्ति रुप में वे उसी प्रकार दोषित है जिस प्रकार शकुन।

अजय अगर बंटी को अपने साथ ले जाकर हॉस्टल ही भेजना चाहता था तो यह बात उसे बंटी को स्पस्ट रुप में बता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

देनी चाहिए। बंटी का पापा के साथ जाने का फैसला बंटी पर ही छोड़ा गया था। बंटी को हॉस्टल भेजने का फैसला भी बंटी पर ही छोड़ा जाना चाहिए, लेकिन अजय तो उसे हॉस्टल भेजने के लिए ही लाया है। डरा-डरा और सहमा-सहमा रहने वाला बंटी बंगाल में घूमते हुए पुलकित हो आया था और धीरे-धीरे पुनः अपनी लय में आ सकता था, लेकिन बाल-मनोविज्ञान से अनजान अजय उसे दुबारा पनपने का मौका ही नहीं देता।

इस प्रकार, बंटी की दुर्दशा के बारे में शकुन, डॉक्टर जोशी और अजय कहीं-न-कहीं छोटी-बड़ी भूमिका में अपराधी ठहरते हैं। सबसे बड़ी भूमिका में अपराधी शकुन के पास सज़ा के रुप में ख़ालीपन, खोखलापन और नक़ली व्यवहार ही शेष रह जाता है।

संदर्भः

(1) आपका बंटी, राजकमल पेपरबैक्स, नौवाँ संस्करण-2015, पृष्ठ-188

RRIJM 2015, All Rights Reserved